परियोजना संवाद पत्र

सितम्बर 2022 | अंक-7

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना (JICA वित्तपोषित)

भीतर :

- मुख्य परियोजना निदेशक की कलम से
- वन बन रहे हैं खुशहाल
- जल संचयन से आई खुशहाली
- पर्यावरण बना स्वच्छ और गांव खुशहाल
- एक कदम हरियाली की ओर
- लक्ष्मी स्वयं सहायता के कदम सफलता की ओर
- मशरूम आजीविका वर्धन का साधन
- लक्ष्मी सवयं सहायता समूह की महिलाएं हो रही आत्मनिर्भर
- "एकता" स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के आए सृजन की ओर बढ़ते कदम
- टौर के पत्ते बनाएगी महिलाओं को आत्मनिर्भर
- संस्थागत विकास एवं सूक्ष्म योजना
- आजीविका घटक के तहत व्यावसायिक योजनाओं का निर्माण
- गवर्निंग बॉडी बैठक
- आयोजित बैठकें / कार्यशालाऐं / प्रशिक्षण कार्यक्रम
- मीडिया में प्रोजेक्ट की गतिविधियाँ

परियोजना कार्यालय पॉटरस हिल, समरहिल, शिमला–5 हिमाचल प्रदेश

दूरभाष: 0177-2830217, ई0 मेल: cpdjica2018hpfd@gmail.com

मुख्य परियोजना निदेशक की कलम से ...

सर्वप्रथम नववर्ष 2023 की सभी पाठकों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं। जाइका वानिकी परियोजना दिन प्रतिदिन वन आश्रित समाज की आजीविका बढ़ाने व वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन को मजबूत करने में कृत संकल्पित है। परियोजना में हो रहे कार्यों को सातवें संस्करण के माध्यम से आपके साथ साझा कर रहा हूँ। परियोजना में कार्यरत कर्मचारी इस अंक के प्रकाशन के लिए बधाई के पात्र हैं। परियोजना क्षेत्र से विभिन्न आलेख प्राप्त हुए हैं , जिनमें उत्तम लेखों व कार्यों को इस परियोजना सवांद पत्र में शामिल किया गया है। जिनके लेख शामिल हुए हैं वे सभी बधाई के पात्र हैं और जिनको स्थान नहीं मिला पाया है वे निराश न होकर अगले अंक के लिए सुधार के साथ अपने लेख भेजेंगे ऐसी मेरी कामना है।

परियोजना का प्रदेश के सात जिलों में कार्यान्वयन किया जा रहा है ,परियोजना के सहयोग से ग्राम वन विकास समितियों के स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की सामुदायिक आजीविका बढ़ाने के लिए 24 आय सृजन गतिविधियों की पहचान की गई है। हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला स्वयं सहायता समूह अपनी आजीविका के लिए प्रौद्योगिकी संचालित आय सृजन गतिविधियों को अपना रही हैं।

परियोजना का लक्ष्य राज्य के सात जिलों में 960 स्वयं सहायता समूहों का गठन करना है और साथ ही उन्हें आजीविका के नवीन आय सृजन गतिविधियों को विकसित करने और अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है।

हम तब अधिक संतुष्ट होते हैं जब हमें परियोजना क्षेत्र से सफलताओं की कहानी मिलती है और परियोजना के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की आजीविका में वृद्धि होती है और उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आता है। ऐसी ही एक सफलता की कहानी में आपके साथ साँझा करना चाहूंगा। वनमण्डल शिमला के कण्डा में स्वयं सहायता समूह एकता ने मशरुम उत्पादन में सफलता प्राप्त की जो की राष्टीय स्तर पर वाहवाही लूट रहा है। इसकी सफलता की विस्तृत कहानी इस पत्र में आपको पढ़ने को मिलेगी। इस उद्यम में समूह की यह पहली सफलता थी, जिसके लिए उन्हें औपचारिक रूप से प्रशिक्षित नहीं किया गया था और उनके प्रदर्शन स्थल पर परियोजना विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में दिन–प्रतिदिन के संचालन के दौरान सीखा। महिला समूह की सदस्यों ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह बहुत सुगम गतिविधि है और चुनने, धोने, पानी भरने और पैकेजिंग के लिए केवल 1–2 घंटे की दैनिक देखभाल की आवश्यकता होती है। विपणन स्थानीय रूप से किया जाता है और मांग बहुत अधिक है और प्रदर्शन स्थल पर नकदी पर नए सिरे से बिक्री की जाती है। स्थानीय आबादी स्थानीय रूप से उगाए गए बटन मशरूम का आनंद ले रही है, जिसकी खेती गांव में शायद पहली बार किसी महिला समूह द्वारा की गई है। वनमण्डल कुल्लू के बबेली में बहुउद्देशीय बिक्री केंद्र भी स्थापित किया गया है ,जिसमें परियोजना के अंतर्गत कार्य कर रही स्वयं सहायता समूह की महिलाएं अपने उत्पाद बेच सकेंगी।

इस परियोजना में विभिन्न गतिविधियां लोगों द्वारा चलाई जा रही है ,जिसमें सफलता की कहानियां उत्साह में वृद्धि करती है। वहीं छोटी मोटी असफलता की संभावना भी बानी रही है। लेकिन हमारा लक्ष्य सफलता की कहानियां लोगों तक पहुंचाना और असफलता से सबक लेना होना चाहिए। परियोजना में कार्यरत कर्मचारियों का भी मैं धन्यवाद करना चाहता हूँ तथा आग्रह करता हूँ कि वे भविष्य में भी अपना मनोबल ऊँचा रखेंगे व परियोजना को आमजनमानस तक पहुंचाने में दिन रात एक कर देंगे।

शुभकामनाएं व धन्यवाद।

श्री नागेश कुमार गुलेरिया, भा. व. से.
अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं
मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका

वन बन रहे हैं खुशहाल

जन जन कर रहे हैं गुणगान,
वन हमारे बन रहे हैं खुशहाल,,
खाली खाली धरा पर,
जायका लाई है बहार,,
जो धरा थी बंजर पड़ी,
निश्ठुर प्राण ही अचेत खड़ी,,
उस धरा में आई है जान,
मानो वायु ने भर दिए हो प्राण।

जन जन कर रहे हैं गुणगान।।
परियोजना के कदम ऐसे पड़े,
सबको संग लिए आगे है बढ़े,,
कर रही है सबका उद्धार
वन हमारे बन रहे हैं खुशहाल।।
वन हमारे बन रहे हैं खुशहाल।।
परियोजना ने सबसे नाता ऐसा जोड़ा है,
रोजगार देकर सभी को स्वावलंबी बना छोड़ा है,,

वृद्ध, युवा, नर और नारी, कर रहे हैं
परियोजना के सभी काम,
जन जन कर रहे हैं गुणगान
वन हमारे बन रहे हैं खुशहाल।।
वन हमारे बन रहे हैं खुशहाल।।

लता शर्मा
वार्ड फेसिलिटेटर (तारा देवी वन परिक्षेत्र) शिमला
ग्रामीण वन विकास समिति शिलडु

जल संचयन से आई खुशहाली

जलवायु परिवर्तन आज एक ऐसी गंभीर समस्या बन चुका हैं जो पूरे विश्व भर को प्रभावित कर रहा हैं। आज के समय में जलवायु परिवर्तन से मौसम का अनुमान लगाना बेहद मुश्किल होता जा रहा है। जहाँ एक तरफ सुखा और पानी की कमी पड़ रही हैं वही दूसरी तरफ अधिक वर्षा से जल स्तोत्र दूषित होते जा रहे हैं जिससे आवश्यक पानी की मात्रा और उस की गुणवता पर खासा प्रभाव पड़ रहा हैं।

पानी की कमी की समस्या का सामना पनेश गांव के लोगों को भी करना पड़ा। क्षेत्र के लोग टमाटर, फूलगोभी, शिमलामिर्च, आलू आदि जैसी विभिन्न नकदी फसलें उगाते हैं और गर्मी के मौसम में गांव के लोगों को पानी की काफी समस्या का सामना करना पड़ता था।

JICA द्वारा वित्त पोषित हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना के माध्यम से तारा देवी वन परिक्षेत्र के अंतर्गत गठित ग्राम वन विकास समिति पनेश के बन का झाल नाला में 2021–2022 में जल संचयन संरचना का निर्माण किया गया है।

संरचना का निर्माण जल भंडारन योजना के तहत ₹5,78,000/– की लागत से किया गया है। इस की भंडारण क्षमता 7 लाख लीटर है। संरचना के निर्माण के बाद गांव के लोगों को काफी ज्यादा लाभ हुआ है।

जहां गर्मी के मौसम में लिफ्ट योजना के माध्यम से एक पम्प से लोग पानी उठाते थे इस बार गर्मियों में दोनों पंप पूरी तरह से काम कर रहे थे और लोगों को पानी की समस्या से काफी राहत मिली है। जल संचयन संरचना से पानी को उठाकर पानी की टैंक में जमा किया जाता है और आगे खेतों की सिंचाई के लिए उपयोग किया जाता है। लगभग 32 हेक्टेयर क्षेत्र में लोगों द्वारा सिंचाई की जार ही है जिस से गांव के करीब 65 परिवार लाभान्वित हो रहे हैं।

कुछ समय पहले गाँव के लोगों को वर्षा पर निर्भर रहना पड़ता था लेकिन इस जल संचयन संरचना के निर्माण से पनेश वासियों की यह निर्भरता दूर हुई साथ ही साथ इस संरचना ने किसानों की आय भी सुनिश्चित की जिस से गांव के लोग अब बहुत संतुष्ट हैं।

योशा सोलंकी
विषय वस्तु विशेषज्ञ (वानिकी और जैवविविधता)
वन मंडल शिमला

पर्यावरण बना स्वच्छ और गांव खुशहाल

हिमाचल प्रदेश को कुदरत ने बेहद सुन्दरता प्रदान की है। यदि धरा पर स्वर्ग की 'उपमा' मेरे प्रदेश को दी जाए तो इसमें कोई भी अतिश्योक्ति नहीं होगी। प्रकृति न जाने हमें क्या–क्या उपहार प्रदान करती है स्वच्छ वायु, जल, वन सम्पदा और न जाने कितनी ही धरोहरें। परन्तु इन सभी को निःशुल्क लेने के पश्चात भी हम मानव जाति इन सम्पदाओं का नित्य दोहन करते हैं। प्रायः हम लोग इतने स्वार्थी हो गए हैं कि आज की भौगोलिक परिस्थितियों और बिगड़ते पर्यावरण का यदि कोई कारण बना है तो हम इंसान ही है। हम लोग ही इस सुन्दर पवित्र धरा को विनाश की ओर ले जा रहे हैं।

ऐसे में एक परियोजना सूत्रधार बनकर सामने आई है और वह है **JICA द्वारा वित्त पोषित "हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रंबधन और आजीविका परियोजना"। यह एक ऐसी परियोजना है** जो कि बंजर पड़ी धरा को हरियाली प्रदान करने में नित्य कार्यरत है। इस परियोजना का मुख्य लक्ष्य है जंगलों का विकास करना और वह भी लोगों की सहभागिता से। जायका परियोजना लोगों की, लोगों के लिए, लोगों के द्वारा इसी परिभाषा को लेकर शुरू की गई है कि यदि लोगों को अपने वार्ड की योजना बनाने से लेकर उसे क्रियान्वित करने तक की जिम्मेवारी लोगों को सौंप दी जाए तो परिणाम शायद अच्छे ही आएगें। और परियोजना की इस नवीन पहल से जैसा सोचा था हुआ भी वैसा ही।

हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले के तारादेवी वन परिक्षेत्र के अंतर्गत गठित पांच ग्रामीण वन विकास समितियों में से एक है "ग्रामीण वन विकास समिति शिलडू"। परियोजना द्वारा जब यहां पर लोगों के साथ ग्रामीण सहभागी समीक्षा बैठकों का आयोजन किया गया तो यही बात निकल कर सामने आई कि जंगल तो गांव के बहुत नजदीक हैं पर उसके बावजूद भी लोग इसका समुचित फायदा नहीं उठा पा रहे और इसका सबसे बड़ा कारण है जंगल में लैंटाना का होना। गांव के लोग इतने बड़े जंगल में केवल अपने पशु चराते थे। निजी क्षेत्र में पैदा होने वाला घास व चारा भी पर्याप्त न होता था। गांव के 8–10 परिवारों को प्रत्येक वर्ष 4000–5000रू तक का घास खरीदना पड़ता था।

लोगों की इस समस्या को मध्यनजर रखते हुए सबसे पहले परियोजना द्वारा लैंटाना उन्मूलन का कार्य किया गया।

तदोपरांत वर्ष 2020 में 10 हैक्टेयर क्षेत्र में समिति द्वारा पौधारोपण का कार्य करवाया गया जिसमें स्थानीय लोगों ने विशेष तौर पर महिलाओं ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

खाईयों (Trenches) का कार्य भी किया गया। तत्पश्चात ग्रामीण वन विकास समिति शिलडू की बैठक में सभी लोगों द्वारा सर्वसम्मिति से यह निर्णय लिया गया कि अब जंगल में पौधारोपण हो गया है इसलिए कोई भी व्यक्ति अपने पशु चरने के लिए जंगल में न खोले तभी हम जंगल से घास व हरे चारे का फायदा उठा पाएगें।

ग्रामीणों ने जंगल में अब पशुओं को छोड़ना बंद कर दिया है। लोगों के इसी सहयोग के परिणामस्वरूप बंजर पड़ी धरा का कायाकल्प ही हो गया है। लोगों को अब अपने पशुओं के लिए चारा खरीद कर नहीं लाना पड़ता है।

गांव के 43 परिवारों ने लगातार तीन माह तक इस क्षेत्र से 600 गडडी घास की काटी है और जो 8–10 परिवार हर साल लगभग 4000–5000रू तक का घास खरीदते थे उसकी बचत

हो रही है साथ हीगांव के अन्य परिवार जिनके गुजारा अपनी निजी घासनियों से हो जाता था वह लोग अब जंगल से अपने घास की जरूरत पूरा कर रहे हैं और अपनी निजी घासनी का घास बेच कर 5000–7000रू तक मुनाफा कमा रहे हैं। यानि कि जंगल से अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के पश्चात अब लोगों ने घास बेचकर अपनी आजीविका में भी वृद्धि की है। स्थानीय लोग जंगल की देख–रेख अपनी सम्पदा की तरह ही कर रहे हैं।

यह कार्य यदि संभव हो सका तो केवल जनसहभागिता व जायका परियोजना के कारण ही संभव हो सका है और परियोजना भी अपनी परिभाषा को फलीभूत करने में सफल रही है। लोगों का कहना है कि यदि जायका वानिकी परियाजना के अंतर्गत उनके वार्ड का चयन नहीं होता तो वह परियाजना द्वारा मिलने वाले लाभों से वंचित रह जाते जिसके लिए वह परियाजना के सदैव आभारी रहेगें।

प्रतिभा शर्मा
क्षेत्र तकनीकी इकाई समन्वयक
वन परिक्षेत्र तारादेवी

एक कदम हरियाली की ओर

पेड़ प्रकृति की वो देन है जिसका कोई विकल्प उपलब्ध नहीं है। पेड़ वायु प्रदूषण कम कर के पर्यावरण को शुद्ध रखते हैं । जितने अधिक पेड़ होंगे पर्यावरण भी उतना ही शुद्ध रहेगा। पेड़ों के कारण ही मनुश्य को अपनी आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के संसाधन प्राप्त होते हैं। पेड़ हमें क्या कुछ नहीं देते वो जीवों को रहने के लिए घर देते हैं उनके भोजन के लिए फल देते हैं। पेड़ हमारे जीवन का अस्तित्व हैं इनके बिना धरती पर जीवन की कल्पना करना असम्भव है इसलिए पेड़ों को वातावरण का भगवान भी माना जाता है। पेड़ धरती पर मौजूद सभी जीवों और मनुष्य के लिए वरदान है परन्तु आधुनिकता की दौड़ में प्रकृति की परवाह किए बिना पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की जाती रही है।

इसी समस्या से हिमाचल की वन भूमि भी अछूती नहीं रही है। वन परिक्षेत्र सरस्वती नगर के अधीन वन खण्ड छाजपुर की केलवी बीट के बलाई ग्राम वासियों ने भी अपने नीजि हितों को सर्वोपरि रख कर प्रकृति की अनमोल धरोहर को बेतहाशा क्षति पहुंचा कर लगभग 30 परिवारों ने वन भूमि पर अवैध कब्जाकर रखा था, कारण नकदी फसल सेब के पौधौ का रोपण। जिसके चलते उस क्षेत्र में रहने वाले लोगों ने कई है0 वनभूमि के तहत सैंकड़ों पेड़ों का बलिदान देकर सेब के बगीचे तैयार कर अपने आर्थिक स्तर को बेहतर करने का आसान सा रास्ता चुन लिया गया।

इस बारे वन विभाग द्वारा समय–समय पर इन अवैध अतिक्रमण कारियों की अवैध गतिविधि पर चेतावनी दी गई, तथा इस अवैध गतिविधि के भविष्य में होने वाले दुष्परिणामों से अवगत करवाया गया। किन्तु लालच व मुफ्त में मिली हुई संम्पदा को मनुष्य आसानी से नहीं छोड़ता।

परिणामस्वरूप वन विभाग ने सभी कब्जाधारियों के मुक्कदमें तैयार कर के समाहर्ता से वन मण्डलाधिकारी रोहडू के न्यायालय मे चालान किए, जिस बारे उच्चन्यायालय को भी सूचित किया गया। माननीय उच्च न्यायालय ने संज्ञान लेते हुए वर्ष 2018 में अवैध कब्जाधारियों का कब्जा हटाने के लिए एस0 आई0 टी0 का गठन किया गया, जिसमें वन विभाग, राजस्व विभाग व पुलिस विभाग के संयुक्त प्रयास से छाजपुर वन खण्ड के बलाई बीट के जोंड–I, जोंड–II में स्थानीय लोगों के सेब के 8000 फल देने वाले पौधे काट कर अतिक्रमणकारियों से कब्जा मुक्त करके वन विभाग ने अपने कब्जे में कर लिया।

उसके पश्चात वर्ष 2020 में जायका वानिकी परियोजना के आने से खाली हुए रक्बों में तारबाड़ के पश्चात 18 हैक्टेयर वन भूमि में पौधारोपण का कार्य किया गया। जिसमें कुल 19,800 देवदार के थैली वाले पौधे रोपित किए गए।

स्थानीय लोगों के फलदार पौधे काटे जाने के पश्चात लोगों ने भी अपनी गलती का सुधार करते हुए वनों को फिर से हरा–भरा करने के उद्देश्य से पौधा रोपण करने व उनकी देखभाल करने का निर्णय लिया। जहां कुछ वर्ष पूर्व सेब के फलदार पौधे लगे थे, आज उस उपजाऊ भूमि में देवदार के पौधे अच्छी स्थिति में विकसित हो रहे हैं। वहां के लोगों का

यही कहना है कि पूर्व में जो गलती हमने की उसे हम आने वाली पीढ़ी को कभी न दोहराने के लिए जागरुक कर अपनी भूल का पश्चाताप् करेंगें। हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारी वन भूमि भी पहले जैसी सुन्दर व हरी–भरी हो जाएगी।

प्रेम कान्ता

क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक,

सरस्वतीनगर, रोहडू।

लक्ष्मी स्वयं सहायता के कदम सफलता की ओर

ग्रामीण वन विकास समिति रोपड़ी का गठन हिमाचल प्रदेश वन परिस्तिथिक तंत्र प्रबंधन (जायका द्वारा वित पोषित) के अंतर्गत 2020 मेहुआ। ग्रामीण वन विकास समिति के गठन के उपरांत सोसाइटी अधिनियम के अंतर्गत इसका पंजीकरण करवाया गया। वन विकास समिति द्वारा परिस्तिथिक तंत्र प्रबंधन हेतुं वन भूमि के 10 हेक्टेयर मे पोध रोपण का कार्य किया गया है। जिसके अंतर्गत स्थानीय लोगों को रोजगार भी दिया गया जिसमे लोगों ने शीशम, के चंपा, कचनार, आवला, जामुन आदि के 8000 पोधे लगाये गये। जिसकी कुल लागत 2,65,241रु आयी है इसके साथ–साथ एक चेकवाल तथा दो पानी के टैंक तथा जंगल में कच्चे रास्ते का निर्माण किया गया है। ग्रामीण वन विकास समिति दवारा ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए स्वयं सहायता समूह बनवाया गया। जिसका नाम लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह रखा गया है। इसमें 20 महिलायें शामिल है। इन महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए इन्हें आचार चटनी का प्रशिक्षण दिया गया साथ ही अजीविका सुधार के लिए धृतकुमारी के पोधे उपलब्ध करवाये गए। आचार चटनी के अंतर्गत इन्होने आम, आवला, गलगल, लहसुन आदि के आचार बनाए। इनके दवारा बनाए गए आचार को सुंदरनगर नलवाढ़ मेले में लगाई गई प्रदर्शनी में रखा गया जहां पर लोगों को इस समूह के बारे में जानकारी मिली। लोगों ने इन महिलाओं दवारा बनाए गए आचार को सराहा तथा खरीदा भी। ये महिलाएं 180रु आवला 200रु आम 150रु गलगल तथा लहसुन 280रु किलो के हिसाब से बेच रही है जिससे की अब उनकी आमदनी में भी बढ़ोतरी हुई है।

विनीता कुमारी

क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक

वन परिक्षेत्र क्षेत्र सुकेत

मशरूम आजीविका वर्धन का साधन

अगर मन में कुछ करने का निश्चय हो तो कोई भी काम मुश्किल नहीं इस कथन को सत्य कर दिखाया सलवाना पंचायत के वार्ड कि ग्यारह महिलाओं ने। जिन्होंने अपनी मेहनत और लगन के साथ मशरूम की खेती करके अपने समूह को सफलता कि तरफ बढाया।

इस समूह का गठन 6/10/2019 को किया गया पहले यह समूह आपसी लेन–देन तक ही सीमित था परन्तु जायका परियोजनाओ के साथ जुड़ कर इन्होने एक नई गतिविधि को चुना। यह गतिविधि मशरूम कि खेती की थी। जायका परियोजनाओं के तहत इस समूह की महिलाओं को कृषि अनुसंधान सुंदरनगर में चार दिन की ट्रेनिंग दिलवाई गयी। जिसमें इस समूह कि महिलाओं ने बढ–चढ़कर भाग लिया और ध्यानपूर्वक ट्रेनिंग की फिर इस समूह को मशरूम का एक डेमो दिया गया जिससे इन महिलाओं के समूह को बहुत ज्यादा फायदा हुआ।

मशरूम के बैग जायका परियोजना के तहत फ्री में दिए गये जिस से इस समूह को 12000रु का फायदा हुआ जिस के कारण समूह कि महिलाओं का हौसला बुलंद हो गया। दूसरी बार फिर इन्होने मशरूम लगाए जिस से समूह को फायदा हुआ।

तीसरी बार समूह ने फिर मशरूम के बैग भरे परन्तु अबकी बार इन्हें नुक्सान उठाना पड़ा क्योंकि मशरूम बैग पर कीड़ा लग गया जिसकी वजह से मशरूम के बैग खराब हो गये इसके उपरान्त महिलाओं ने बटन मशरूम की तरफ अपनी दिलचस्पी दिखाई और 40 बैग बटन मशरूम के भरे जिसमे इनको कम से कम 3000रु का फायदा हुआ।

सुनीता कुमारी
क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक, कंगू
वन परिक्षेत्र क्षेत्र सुकेत

लक्ष्मी सवयं सहायता समूह की महिलाएं हो रही आत्मनिर्भर

जाइका द्वारा हिमाचल प्रदेश में महिलाओं के आजीविका मिशन के अंतर्गत गठित किये गये स्वयं सहायता समूह द्वारा महिलाऐं आत्म निर्भर बनने में सार्थक सबित हो रही है। समूह की महिलाऐं अपना रोजगार कर न सिर्फ अपने आप को आत्मनिर्भर बना रही है बल्कि वे अपने परिवार का सहारा बनी है।

लक्ष्मी सवयं सहायता समूह जनाहल का गठन सितम्बर 2020 में जाइका परियोजना की मदद से किया गया। समूह में प्रधान, सचिव, कोषाध्यक्ष, सचिव सहित 19 सदस्य है। समूह की महीने में एक बैठक होती है। जिसमें प्रत्येक महिला 50 रूपए का योगदान करती है समूह बनने के बाद से समूह परियोजना अधिकारी व कर्मचारियों की सहायता से बिना किसी रूकावट के आगे बड़ रही हैं।

आय अर्जित करने के लिए लक्ष्मी सवयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा स्वेछिक रूप से बैठक में प्रस्ताव पारित करके खड्डीयों में बुनाई के काम को चुना गया। इसके बाद परियोजना द्वारा महिलाओं को 75% अनुदान पर खड्डीयां प्रदान की गए। परियोजना द्वारा

महिलाओं को 25 मार्च 2022 में 45 दिनों की बुनाई की ट्रेनिंग भी दी गई। इसके अलावा परियोजना द्वारा समूह के लिए 1 लाख का रिवॉल्विंग निधि का भी प्रावधान किया गया।

सामान्यता घर पर होने वाले काम जैसे बच्चों का पढ़ाना, स्कूल भेजना, पशुओं के चारे की व्यवस्था करना, व घर की साफ सफाई जैसे कार्यों को करने के बाद महिलाओं को जितना भी समय मिल रहा है उसमें महिलायें हर दिन काम कर रही है। जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं ने दो महीनें में 45,135 रूपए की कुलवी टोपी के बॉर्डर को बेच कर अपनी आय में वृद्धि की। आय सृजन गतिविधि का लाभ समूह के बैंक खाते में भेजा जाता है। जिसके वाद समूह की महिलाऐं आपस में पैसों को बांट देती है।

महिलाऐं आपस में नाममात्र ब्याज दर पर ऋण का लेन–देन करती है जिससे महिलाऐं आपात स्वास्थ्य सेवा व अन्य छोटे–छोटे कार्यों के लिए समूह से बिना झिझक ऋण लेती हैं और तय सीमा पर वापिस भी करती हैं इससे महिलाओं को हाथ फैलाने की जरुरत नहीं पड़ती है और वे स्वाभिमान के साथ जीती है, इन महिलाओं को देखकर गाँव की अन्य महिलाऐं भी समूह के साथ जुड़ने की इच्छुक हैं।

सच में जाइका परियोजना द्वारा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाकर सशक्त किया है, महिलाऐं सशक्त होगी तोह परिवार सशक्त होगा, परिवार सशक्त होगा तो देश सशक्त होगा। यही परियोजना की परिकल्पना है।

प्रिया
विषय वस्तु विशेषज्ञ
(वानिकी और जैवविविधता)

"एकता" स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के आए सृजन की ओर बढ़ते कदम

जायका वानिकी परियोजना के अंतर्गत, स्वयं सहायता समूह "एकता" वन विकास समिति जरड़, वन मण्डल पार्वती, शमशी मे मशरूम उत्पादन गतिविधि को अपनी आए का सृजन करने के लिए निश्चय किया है।

व्यवसाय योजना के अनुसार समूह ने 250 बैग में ढिंगरी मशरूम का उत्पादन करने का लक्ष्य रखा था परंतु समूह के सदस्यों ने हानी होने के डर व संकोच के कारण प्रारम्भ मे 100 बैग से उत्पादन करने का निर्णय किया तथा प्रथम चक्र मे लगभग 175 बैग ढिंगरी मशरूम का उत्पादन किया है। इसके लिए समूह ने केवल 14000 रुपये व्यय किए तथा 26000 रुपये की आए अर्जित की है।

समूह के सदस्यों द्वारा 12000 रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित करने पर काफी उत्साहित हैं और भविष्य मे व्यवसाए योजना के अनुसार मशरूम का उत्पादन बढ़ाने का निश्चय किया है ताकि अधिक लाभ अर्जित कर सके। उलेखनीय है की जाइका वानिकी परियोजना ने इस समूह को मशरूम उत्पादन शुरू करने के लिए पूंजीगत व्यय का 50% (23710 रुपये) उपकरण (स्प्रे पम्प, रैक,फैन, ब्लोवर, थर्मामीटर, वजनी मशीन इत्यादि) खरीदने के लिए सहायता दी है। परियोजना की सहायता से समूह को अभिसरण के अंतर्गत बागवानी विभाग के द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण कराया गया है।

इसके अतिरिक्त 1 लाख रुपये परियोजना द्वारा रिवॉल्विंग निधि भी प्रदान की गयी है, जिसकी सहायता से समूह बैंक से ऋण लेकर मशरूम का अधिक उत्पादन कर सके और ज्यादा आय बढ़ा सके। ढिंगरी मशरूम को बेचने मे समूह की महिलाओं को ज्यादा परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा क्योंकि उनकी अधिकतर मशरूम स्थानीय लोगों और स्थानीय बाजार मे ही हाथों–हाथ बिक गयी। ढिंगरी मशरूम प्रोटीन और विटामिन से भरपूर होती है और स्वाद में भी बहुत अच्छी होती है। अत्यधिक पौष्टिक होने के अलावा ये मशरूम हृदय और प्रतिरक्षा प्रणाली के स्वास्थ्य को बढ़ावा देती हैं तथा स्वस्थ रक्त शर्करा को नियंत्रण करने मे सहायता प्रदान करती हैं इसके साथ ये एंटीऑक्सिडेंट और एंटी इनफ्लेमटरी भी होती हैं। ढिंगरी मशरूम की अधिक मांग होने के कारण समूह को आने वाले समय मे अधिक लाभ होने की आशा है।

पदम सिंह चौहान
(सेवानिवृत्त एचपीएफएस)
राहुल वर्मा, एसएमएस जेआईसीए (डीएमयू पार्वती)

टौर के पत्ते बनाएगी महिलाओं को आत्मनिर्भर

हिमाचल प्रदेश के जिला मण्डी में जोगिन्द्रनगर उपमण्डल की ग्राम पंचायत रोपापधर का एक छोटा सा गांव बनेहड़ है जो समुद्रतल से लगभग 3600 फीट की ऊंचाई में बसा है। यह गांव जहाँ पर कई प्रकार के पेड़ जैसे कि टोर, चील, काफल, बुरांश, वान से घिरा हुआ है जो इसकी शोभा बढ़ाते है। बनेहड़ गांव के मुख्य देवता "बाबा बालक नाथ जी" है। इस गांव की जनसंख्या लगभग 350 के करीब है। यह गांव लगभग 70 प्रतिशत जंगल से घिरा है।

हिमाचल प्रदेश पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन एंव आजिविका सुधार परियोजना में बनेहड़ गांव को 12 फरवरी 2021 में शामिल किया गया । उसके बाद ग्राम वन विकास समिति (वी0 एफ0 डी0 एस0) का चयन किया गया । इसमें ग्राम वन विकास समिति (वी0 एफ0 डी0 एस0) का अध्यक्ष श्री प्यार चन्द तथा सचिव श्रीमति भगवती देवी को चुना गया। हिमाचल प्रदेश पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन एंव आजिविका सुधार परियोजना के द्वारा सितम्बर माह में वन मण्डल जोगिन्द्रनगर की ग्राम वन विकास समिति बनेहड़ द्वारा बरसात के मौसम में विभिन्न प्रजातियों के 5 हजार पौधे रोपे गए जिसमें मुख्यतः हरड़, भेड़ा, आंबला, रीठा, जामुन, शीशम, खैर इत्यादि रोपे गए जिसमें आगामी समय में बनेहड़ के जंगल हरे भरे दिखाई देगें। इसके लिए गांव के लोगों में मुख्यतः युवक मण्डल, महिला मण्डल, स्वयं सहायता समूह तथा गांव के जनप्रतिनिधियों ने पौधों को लगाने में बढ़–चढ़ कर भाग लिया और विभाग को आश्वासत करवाया कि इन पौधों का सरंक्षण भी पूरे गांव वासी स्वंय करेंगे। इसके लिए परियोजना के माध्यम से बाड़बन्धी के लिए तारें तथा पोल प्रदान किए। परियोजना का मुख्य उदेश्य यह है कि हम पार्यावरण को कैसे बचाए रखने में अपना योगदान दे सकते है। इसके लिए परियोजना के तहत स्वंय सहायता समूह गठित किया, जो आगामी समय में टौर के पतों से पतल बनाऐगें जिसमें महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिलेगा। इससे पता चलता है कि हिमाचल प्रदेश पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन एंव आजिविका सुधार परियोजना जापान सरकार जाईका के तहत शुरू किए गए कार्यक्रम के माध्यम से पर्यावरण के संरक्षण को लेकर जागरूक किया जा रहा है जिसके प्रति गांव के लोग भी काफी रूचि दिखा रहे हैं।

सुमित भरवाल,
क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक, जोगिन्द्र नगर

संस्थागत विकास एवं सूक्ष्म योजना

प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा चौथे चरण की 458 ग्राम वन विकास समितियों व जैव–विविधता प्रबन्धन समितियों उप समितियों के चयन की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। 395 वी0एफ0डी0एस0, 22 वन मण्डलों के 72 वन परिक्षेत्रों व 5 वन्यप्राणी परिक्षेत्रों के सम्बन्धित वार्डों की ग्राम वन विकास समितियों व जैव विविधता प्रबन्धन समिति उप समितियों का गठन हो चुका है और 312 वन विकास समितियों की सूक्ष्म योजनाऐं तैयार हो चुकी हैं। 66 वन विकास समितियों के गठन की प्रारम्भिक चरण के काम शुरू हो चुका है। सूक्ष्म योजनाएं तैयार करने हेतु सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन की प्रक्रिया आरम्भ की गई है।

हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की आजीविका के लिए मशरूम की खेती एक वरदान

परियोजना के सहयोग से ग्राम वन विकास समितियों के स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की सामुदायिक आजीविका बढ़ाने के लिए 24 आय सृजन गतिविधियों की पहचान की गई है।

हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला स्वयं सहायता समूह अपनी आजीविका के लिए प्रौद्योगिकी संचालित आय सृजन गतिविधियों को अपना रही हैं। नवंबर 2022 में शिमला शहर के उपनगरों में घनाहाटी के निकट ग्राम कांडा में एकता महिला स्वयं सहायता समूह को उनके गांव में जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों और विशेषज्ञों द्वारा बटन मशरूम की खेती के लिए उन्मुख किया गया था। समूह ने किराए के कमरे में 10 किलोग्राम के 245 बीज वाले कम्पोस्ट बैग के साथ बटन मशरूम का उत्पादन शुरू किया। बटन मशरूम के उत्पादन में स्वयं सहायता समूह की महिला सदस्यों के लिए परियोजना के विशेषज्ञों द्वारा दिन–प्रतिदिन तकनीकी सहायता प्रदान की गई। 25 दिनों के बाद बटन मशरूम का उत्पादन शुरू हुआ और एक सप्ताह में समूह ने 200 किलोग्राम मशरूम का विपणन किया, जो एक सप्ताह में 20,000 रुपये से अधिक की सकल वापसी के साथ 110–130 रुपये प्रति किलोग्राम की कीमत पर मिल रहा है। इस उद्यम में समूह की यह पहली सफलता थी, जिसके लिए उन्हें औपचारिक रूप से प्रशिक्षित नहीं किया गया था और उनके प्रदर्शन स्थल पर परियोजना विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में दिन–प्रतिदिन के संचालन के दौरान सीखा। उत्पादन लगभग 2 महीनों तक जारी रहेगा और इस दौरान समूह 500 किलोग्राम था उत्पादन करेगा जिसमें 50000 रूपये बाजार मूल्य का कुल उत्पादन अपेक्षित है। महिला समूह की सदस्यों ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह बहुत सुगम गतिविधि है और चुनने, धोने, पानी भरने और पैकेजिंग के लिए केवल 1–2 घंटे की दैनिक देखभाल की आवश्यकता होती है। विपणन स्थानीय रूप से किया जाता है और मांग बहुत अधिक है और प्रदर्शन स्थल पर नकदी पर नए सिरे से बिक्री की जाती है। स्थानीय आबादी स्थानीय रूप से उगाए गए बटन मशरूम का आनंद ले रही है, जिसकी खेती गांव में शायद पहली बार किसी महिला समूह द्वारा की गई है।

एकता स्वयं सहायता समूह की प्रधान सुश्री पूजा और समूह की अन्य महिलाओं का कहना है कि उन्हें बटन मशरूम उगाने का कोई व्यावहारिक प्रशिक्षण नहीं मिल रहा था, लेकिन जाइका परियोजना के विशेषज्ञों की प्रेरणा व सहायता ने हमारे लिए इसे संभव बनाया है। यह मशरूम उगाने का पहला प्रदर्शन था और इस गतिविधि में रुचि रखने वाले विभिन्न घरों से कई आगंतुक और महिलाएं हैं।

गवर्निंग बॉडी बैठक

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना के नियामक मण्डल की आठवीं बैठक 10 नवंबर, 2022 को सचिवालय के आर्मसडेल भवन सभागार, शिमला में आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता प्रमुख सचिव (वन) हि.प्र. सरकार, श्री ओंकार चंद शर्मा ने की। इस सभा में नियामक मण्डल सदस्यों, मुख्य परियोजना निदेशक एवं सदस्य सचिव, परियोजना निदेशक तथा कार्यालय कर्मचारियों ने भाग लिया। सभा के आरम्भ में मुख्य परियोजना निदेशक एवं सदस्य सचिव मुख्य ने नियामक मण्डल के अध्यक्ष एवं अन्य सदस्यों का अभिनन्दन किया। उन्होंने परियोजना के लक्ष्यों, उद्देश्य, परिव्यय तथा घटकों सम्बन्धी जानकारी प्रस्तुत की। तत्पश्चात, माननीय अध्यक्ष की आज्ञा से आठवीं नियामक मण्डल बैठक कार्य सूची/एजैंडा की समीक्षा व आगे के 19 एजैंडा को विस्तृत चर्चा एवं निर्णय हेतु पस्तुत किया। बैठक में निम्नलिखित निर्णय लिए गए:-

- नाचन एवं बिलासपुर में वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर (जल भदारन) के निर्माण को मंजूरी।
- क्लस्टर स्तर पर आजीविका संसाधन केन्द्र की स्थापना की मंजूरी।
- प्रोजेक्ट रेंज के बाहर चिलगोजा के प्राकृतिक क्षेत्रों में चिलगोजा का वृक्षारोपण को मंजूरी।
- जोगिंदरनगर मण्डल में नर्सरी के लिए बोरवेल में बिजली कनेक्शन का प्रावधान को मंजूरी।
- विभिन्न आय सृजन गतिविधियों के तहत कौशल आधारित प्रशिक्षण का मानकीकरण।
- प्रशिक्षण एवं कार्यशाला में विभाग/परियोजना कर्मचारियों को मानदेय को मंजूरी।
- एपीडी कुल्लू और रामपुर के कार्यालय में लिपिक कर्मचारियों की नियुक्ति को मंजूरी।
- पीएमसी (SOFRECO) के माध्यम से GIS/MIS सलाहकार की सेवाएं लेना को मंजूरी।
- कर्मचारी प्रदर्शन प्रबंधन प्रणाली को मंजूरी।
- कमंद नर्सरी में बाढ़ से हुई क्षति को बट्टे खाते में डालना को मंजूरी।
- परियोजना के अधिकारियों और हितधारकों की क्षमता बढ़ाने के लिए भविष्यवादी नेतृत्व

आयोजित बैठकें / कार्यशालाऐं / प्रशिक्षण कार्यक्रम

- 16 वीं परियोजना की कार्यकारिणी समिति की बैठक 16 अगस्त 2022 को हुई।
- हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना के गवर्निंग बॉडी की 8वीं बैठक 10 नवंबर, 2022 को सचिवालय के आर्मसडेल भवन सभागार, शिमला में आयोजित की गई।

सितम्बर तक आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का विवरण :-

क्रम संख्या	डिवीजन	रेंज	वीएफडीएस	प्रशिक्षित समूह का नाम	आईजीए गतिविधि	प्रशिक्षण एजेंसी	अवधि	प्रतिभागियों की संख्या
1	एनी	निथर	शरशा	कटिंग एंड टेलरिंग	कटिंग एंड टेलरिंग	लोकल स्किल्ड ट्रेनर	20 दिन	12
2	मंडी	मंडी	हरिओम (सकरोहा)	नवाही माता	मशरूम की खेती	केवीके सुंदरनगर	5 दिन	6
3			खारसी	लक्ष्मी	वर्मी कम्पोस्टिंग	केवीके सुंदरनगर	1 दिन	13
4			हरिओम (सकरोहा)	हरिओम	वर्मी कम्पोस्टिंग	केवीके सुंदरनगर	1 दिन	9
5			खारसी	शिव शक्ति	वर्मी कम्पोस्टिंग	केवीके सुंदरनगर	1 दिन	9
6	चौपाल	नेरवा	धलेउना- गुणसा	सरस्वती गुणसा II	वर्मी कम्पोस्टिंग	एईओ नेरवा	1 दिन	8
7			बाड़ीचा	बाड़ीचा	वर्मी कम्पोस्टिंग	एईओ नेरवा	1 दिन	7
8			बागना	बागना	वर्मी कम्पोस्टिंग	एईओ नेरवा	1 दिन	6
9			रिनजट	विश्वकर्मा	वर्मी कम्पोस्टिंग	एईओ नेरवा	1 दिन	8
10		श्रोच	जनोग	जनोग - I	कटिंग एंड टेलरिंग	लोकल स्किल्ड ट्रेनर	24 दिन	7
11			जनोग	जनोग - II	कटिंग एंड टेलरिंग	लोकल स्किल्ड ट्रेनर	24 दिन	7
12			इरा	चौहानधार - II	कटिंग एंड टेलरिंग	लोकल स्किल्ड ट्रेनर	20 दिन	10
13			इरा	चौहानधार - III	कटिंग एंड टेलरिंग	लोकल स्किल्ड ट्रेनर	20 दिन	8
14		चौपाल	मल्हाला	मझौतली	कटिंग एंड टेलरिंग	लोकल स्किल्ड ट्रेनर	20 दिन	10
15	बंजार	सैंज	सारी	कंचन	हथकरघा	लोकल स्किल्ड ट्रेनर	45 दिन	10
16			चाकुरता	महालक्ष्मी	हथकरघा	लोकल स्किल्ड ट्रेनर	45 दिन	10
17			चाकुरता	माबुंगा	हथकरघा	लोकल स्किल्ड ट्रेनर	45 दिन	10
18			थाटिबीर	लक्ष्मी	हथकरघा	लोकल स्किल्ड ट्रेनर	45 दिन	14
19			थाटिबीर	देवीदयाल	मशरूम की खेत	लोकल स्किल्ड ट्रेनर	5 दिन	11
20			कानौन	देव ब्रह्मा	हथकरघा	लोकल स्किल्ड ट्रेनर	45 दिन	8
21			कानौन	महालक्ष्मी	हथकरघा	लोकल स्किल्ड ट्रेनर	45 दिन	7
22	किन्नौर	निचार	थाच	क्रांतिवीर	चुल्ली तेल	लोकल ट्रेनर	1 दिन	10
23		कटगांव	कंधार	कामशु नारायण	वर्मी कंपोस्टिंग	लोकल ट्रेनर	1 दिन	11
24		भावनगर	जानी	दुर्गा	वर्मी कंपोस्टिंग	लोकल ट्रेनर	1 दिन	10

मीडिया में प्रोजेक्ट गतिविधियाँ

परियोजना प्रबंधन इकाई त्रिपुरा प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना प्रतिनिधिमंडल हिमाचल के दौरे पर

सवेरा ब्यूरो (मंडी): परियोजना प्रबंधन इकाई त्रिपुरा प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना के 8 सदस्यों का प्रतिनिधिमंडल नीरज कुमार आईएफएस की अध्यक्षता में मंडी पहुंचा। इस दल ने वन मंडल मंडी के वन परिक्षेत्र कांगू का दौरा और द्रंग और सुकेत वन सुकेत वनमंडल के वन परिक्षेत्र कांगू का दौरा ... त्रिपुरा जाइका वानिकी परियोजना -प्रतिनिधिमंडल ने कटौला के ... पत्तों से पत्तल बनाने वाले स्वयं सहायता समूहों बिहनधार एक और ...

जाइका वानिकी परियोजना के 8 सदस्यों ने वन परिक्षेत्र कांगू का किया दौरा

छात्रों ने किया पॉटर हिल का दौरा

... 17 नवम्बर (ब्यूरो) : राजकीय ...

सिंगल यूज प्लास्टिक पर बैन से पर्यावरण ही नहीं पत्तों की थाली-दोने बनाने वालों को भी होगा लाभ

'सिंगल यूज प्लास्टिक' यानी एक ही बार उपयोग होने वाली प्लास्टिक से बनी चीजों पर 1 जुलाई से देश भर में लगे प्रतिबंध के बाद दुनिया के दूसरे बड़ी आबादी वाले देश भारत में प्लास्टिक प्रदूषण से कचरे के ढे... नजर आने लगे हैं।

... स्थानीय लोगों, विशेषकर पर्वतीय राज्य हिमाचल प्रदेश के ग... वरदान के रूप में आया है, जो पर्यावरण हि... पत्तलियां और दोने बनाने ... दिला रही है। ... समूहों की सह... कोऑपरेश... करने के बजा... आजीविका में ... है कि प्रशिक्षि...

बालूगंज स्कूल में चल रहे एनएसएस शिविर में स्वयंसेवकों ने किया जाइका मुख्यालय का दौरा

- विभिन्न वनस्पतियों के बारे में हासिल की जानकारी, पॉटरहिल के जंगल से किया कूड़ा-कचरा साफ

सवेरा ब्यूरो

शिमला, 17 नवंबर: राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बालूगंज में 7 दिवसीय एनएसएस शिविर आयोजित किया जा रहा है। शिविर के तीसरे दिन हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना मु... पॉटरहिल का दौरा किया। स्व... ने हिमालय वन अनुसंधान सं... पॉटरहिल स्थित नर्सरी को ...

स्वयंसेवकों ने जाइका से संबंधित जानकारी भी अर्जित की। जिसमें उन्होंने जाना कि कैसे परियोजना के ...

विशेषकर नशे से दूर रहने का आह्वान किया। उन्होंने छात्रों को पढ़ाई के साथ खेलकूद, अन्य सामाजिक गतिविधियों ...

त्रिपुरा के प्रतिनिधिमंडल ने ली टौर के पत्तलों की जानकारी

मंडी : मंडी दौरे पर आया त्रिपुरा का दल स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों के साथ सामूहिक चित्र में।

मंडी पहुंचा त्रिपुरा जायका वानिकी परियोजना का प्रतिनिधिमंडल

साथ पत्तल बनाने की जानकारी एकत्रित की और अन्य उत्पाद बनाने का अनुभव लिया। इसके बाद प्रतिनिधिमंडल ने सुकेत के कांग... वन परिक्षेत्र की वन ग्राम ...

वन मंडल रोहड़ू की विकास समितियों की बैठक

जाईका वानिकी परियोजना के अंतर्गत वन मंडल रोहड़ू की 5 ग्राम वन ... समितियों की बैठक डोडराक्वार में अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल ... का वानिकी परियोजना के मुख्य निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ... में संपन्न हुई। इसमें परियोजना से संबंधित गतिविधियों पर चर्चा की ... लोगों ने परियोजना के माध्यम से होने वाले कार्यों ...

मृदा एवं जल संरक्षण की रणनीति पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित

Share story:

जायका के तहत 330 से अधिक ग्राम वन विकास समितियां व 568 स्वयं सहायता समूह कर रहे कार्य : राजेश

त्रिपुरा प्रदेश के जायका वानिकी परियोजना का एक प्रतिनिधिमंडल ने किया पॉटरहिल का दौरा

शिमला, 19 सितम्बर (ब्यूरो): परियोजना प्रबंधन इकाई त्रिपुरा जायका वानिकी परियोजना के नौ सदस्यों के एक प्रतिनिधिमंडल नीरज कुमार (आई.एफ.एस.) की अध्यक्षता में हिमाचल दौरे पर पहुंचा है। इस प्रतिनिधिमंडल ने सोमवार को पॉटरहिल समरहिल में हिमाचल प्रदेश जायका वानिकी परियोजना मुख्यालय का दौरा किया। प्रतिनिधिमंडल हिमाचल प्रदेश की जायका गतिविधियों को जानने के लिए 24 सितम्बर तक हिमाचल दौरे पर रहेगा।

परियोजना निदेशक हिमाचल जायका वानिकी परियोजना राजेश शर्मा ने प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों को परियोजना के तहत हिमाचल राज्य में की जा रही गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि 330 से अधिक वी.एफ.डी.एस. (ग्राम वन विकास समितियां) और 568 स्वयं सहायता समूह परियोजना के अंतर्गत कार्य कर रहे हैं। उन्होंने प्रतिनिधिमंडल को परियोजना की सफलता की कहानियों के साथ वन्यजीव प्रबंधन, अग्नि सुरक्षा, ड्रोन प्रौद्योगिकी के उपयोग, अनुसंधान गतिविधियों, जड़ी-बूटी सेल, वृक्षारोपण, नर्सरी में सुधार और आय सृजन गतिविधियों की स्थिति के बारे में जानकारी सांझा की।

प्रतिनिधिमंडल इन क्षेत्रों का करेगा दौरा

त्रिपुरा से आया प्रतिनिधिमंडल हिमाचल में परियोजना की प्रगति से खुद को परिचित कराने के लिए सुकेत, मंडी, कुल्लू और वन्य जीव विभाग की फील्ड गतिविधियों का भी दौरा करेगा।

शिमला : त्रिपुरा प्रदेश का प्रतिनिधिमंडल संयुक्त चित्र में।

जायका के तहत प्रदेश में तैयार किए 400 से अधिक माइक्रो प्लान : गुलेरिया

शिमला : जायका की 8वीं गवर्निंग बॉडी की बैठक की अध्यक्षता करते प्रधान सचिव वन ओंकार शर्मा।

शिमला, 10 नवम्बर (भूपिन्द्र): अतिरिक्त मुख्य ...पाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जायका) ... कुमार गुलेरिया ने बताया कि जायका के तहत ...हायता समूहों की आजीविका बढ़ाने के लिए ...अधिक माइक्रो प्लान व बिजनेस प्लान तैयार ... चुके हैं और वित्त वर्ष 2022-2023 में ...अधिक नए स्वयं सहायता समूह के साथ ... जाएगा।

... उन्होंने वीरवार को राज्य सचिवालय ... हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र ... आजीविका सुधार परियोजना (जायका ... की 8वीं गवर्निंग बॉडी की बैठक को ... हुए कही। इस बैठक की अध्यक्षता ... (वन) ओंकार शर्मा ने की। बैठक को संबोधित करते हुए अतिरिक्त मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक नागेश कुमार गुलेरिया ने जायका वानिकी परियोजना के अंतर्गत होने वाले कार्यों की विस्तृत जानकारी दी और पूर्व में हुई गवर्निंग बॉडी की बैठकों की संक्षिप्त रिपोर्ट भी रखी। उन्होंने कहा कि जायका वानिकी परियोजना के तहत विभिन्न विकासात्मक व आजीविका वर्धन के कार्य परियोजना के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों में हो रहे हैं। परियोजना की विभिन्न सफलताओं की कहानियों के बारे में भी उन्होंने बताया।

एक उदाहरण घुमारवीं का है, जिसमें 10 महिलाओं के स्वयं सहायता समूह ने मधुमक्खी पालन से लगभग 40 हजार का शहद बेचा और प्रति महिला को 4 हजार का मुनाफा हुआ। अब इसकी मांग स्थानीय बाजार, जिला व प्रदेश स्तर के बाजारों में भी बढ़ने लगी है। बैठक के दौरान प्रधान सचिव वन, ओंकार शर्मा ने जायका वानिकी परियोजना के अंतर्गत होने वाले कार्यों की सराहना की और कहा कि हमें परियोजना के माध्यम से ऐसे उदाहरण स्थापित करने चाहिए, जिससे लोगों का विश्वास और उत्साह परियोजना के प्रति बढ़े।

उन्होंने पहले से कार्य कर रहे स्वयं सहायता समूहों को और अधिक सशक्त बनाने का आह्वान किया। बैठक के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव डी.एफ.ओ. एवं परियोजना निदेशक राजेश शर्मा ने प्रस्तुत किया। इस मौके पर प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं वन बल प्रमुख अजय श्रीवास्तव, संयुक्त सचिव (वन) प्रवीण, जड़ी-बूटी सैल के निदेशक डा. आर.सी. कंग, वन विभाग, कृषि विभाग, नौणी विश्वविद्यालय के अधिकारी व परियोजना के कर्मचारी भी मौजूद रहे।

जायका परियोजना में चलाई जा रहीं 22 गतिविधियां

जायका परियोजना में 22 से अधिक आजीविका वर्धन गतिविधियां चलाई जा रही हैं, जिसमें सिलाई-कढ़ाई, मशरूम उत्पादन और टौर के पत्तों से डूने व पत्तल बनाने जैसी मुख्य गतिविधियां शामिल हैं और इनकी मार्केटिंग के लिए विभिन्न माध्यम उपलब्ध करवाए जा रहे हैं।

विस्तृत जानकारी के लिए संर्म्पक करें :.

मुख्य परियोजना निदेशक, जाईका वानिकी परियोजना

पॉटरस हिल, समरहिल, शिमला-5 हिमाचल प्रदेश दूरभाष: 0177-2830217, ई0 मेल: cpdjica2018hpfd@gmail.com

वेबसाइट : https://jicahpforestryproject.com

अतिरिक्ति परियोजना निदेशक, अनुश्रवण एवं मूल्यांकन इकाई

जाइका वानिकी परियोजना, कुल्लू। दूरभाष:1902 -226636, ई0 मेल :- pdjicakullu@gmail.com

अतिरिक्ति परियोजना निदेशक, सामूदायिक एवं संस्था क्षमता उत्थान इकाई

जाईका वानिकी परियोजना, रामपुर दूरभाष: 01782-234689, ई0 मेल :- dpdrmp2018@gmail.com

प्रकाशन :- अनुश्रवण एवं मूल्यांकन इकाई, हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजिविका सुधार परियोजना कुल्लू